

प्रकाशनार्थ

16 जून, 2022 गोरखपुर।

श्री गोरखनाथ मंदिर गोरखपुर में आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक योग शिविर एवं शैक्षिक कार्यशाला के द्वितीय दिवस के सैद्धांतिक सत्र में 'कोविड-19 के उपलक्ष्य में योग की उपादेयता' विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के आयुर्वेद संकाय के रचना शारीर विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर वी गणेश पाटिल ने कहा कि कोरोना वायरस संपूर्ण विश्व के लिए एक नया अनुभव था। अमेरिका चीन जैसे विकसित देश भी कुछ महीनों के लिए अपने शहरों में लॉकडाउन लगाने के लिए मजबूर हुए, जो सामान्य जनजीवन के लिए एक कठिन दौर था। इस दौर में हम सभी जिन मुख्य समस्याओं से पीड़ित हुए उसके लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी मुख्य कारण बनी। कोरोना के प्रभाव की अगर बात करें तो भारत अपने कम संसाधनों में ही अन्य विकसित देशों की अपेक्षा इस महामारी को नियंत्रित करने में सफल रहा, क्योंकि हमारी भारतीय जीवन शैली में योग व हमारा प्राचीन आयुर्वेद शास्त्र रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाएं रखने के लिए अनेकों उपाय बताता है जो हमारी दिनचर्या में शामिल हैं। योग के अंतर्गत ध्यान व प्राणायाम से शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। प्रो.पाटिल ने कहा कि एक शोध में पाया गया है कि गंगा नदी के आसपास के शहरों में रहने वाले लोगों पर जो प्रभाव कोरोना का हुआ है उसके फलस्वरूप वहां के लोगों की आयु लगभग 5 वर्ष से साडे 7 वर्ष तक कम होने का अनुमान है। हमारा गोरखपुर भी इन शहरों की सूची में है इसलिए हमें उस सूची से बचने के लिए अपने जीवन में योग व आयुर्वेद को अपनाना होगा और अपने जीवन का अंग बनाना होगा। हमारी जीवन चर्या में योग न केवल हमें स्वस्थ होने का कारण बनता है अपितु सुख शांति का भी कारण बनता

है। उन्होंने कहा कि योग व आयुर्वेद हमारी सनातन संस्कृति की विरासत है, इन दोनों के माध्यम से केवल शरीर ही नहीं अपितु मन और आत्मा को भी पूर्ण स्वस्थ रखा जा सकता है। यही कारण है कि कोरोना से व्याप्त भय के कारण जो हार्टअटैक की अधिकता हुई उसमें योग व प्राणायाम अभय दान देने का कार्य किया। उन्होंने एक शोध पत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि कोरोना के कारण होने वाले कफ जन्य दोषों का निदान हठयोग के धौती नेती इत्यादि षट् कर्मों से बताया गया है। आज विश्व संगठन इस योग व आयुर्वेद पर अनेकों शोध कर रहा है और उसके लिए गुजरात के जामनगर में विश्व संगठन की तरफ से एक संस्थान की स्थापना भी हो गयी है।

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ के प्राचार्य डॉ॰ अरविन्द कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि योग दर्शन को हमारे देश के पतञ्जलि अदि ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व सैद्धांतिक व व्यवहारिक रूप में अपनाया था। महायोगी गुरु गोरखनाथ ने समाज के प्रत्येक जन जन तक योग के क्रियात्मक पक्ष को प्रचारित व प्रसारित किया। हम अपने इस प्राचीन ज्ञान को विस्मृत कर दिए थे जो कोरोना काल में पुनः याद किया गया और न केवल भारत हीं वरन् पूरा विश्व इसको अपनाने के लिए उतावला है। योग व आयुर्वेद की उपयोगिता को स्वीकार करते हुए इस समय पूरी मानव सभ्यता अपने कल्याण की कामना कर रही है।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों का व श्रोताओं के रूप में उपस्थित विद्यापीठ के आचार्य गण छात्र गण व अन्य योग प्रशिक्षुओं सहित सभी का आभार ज्ञापन महायोगी गुरु गोरखनाथ योग संस्थान के योगाचार्य योगी सोमनाथ ने किया ।

कार्यक्रम का प्रारम्भ महापुरुष द्वय के चित्र पर पुष्पांजलि व ओमप्रकाश त्रिपाठी के वैदिक मंगलाचरण से हुआ ।

संपूर्ण कार्यक्रम का कुशल संचालन शुभम मिश्र ने किया। कार्यक्रम में डॉ॰ रोहित कुमार मिश्र, डॉ॰ दिग्विजय शुक्ल, डॉ॰ प्रांगेश मिश्र, डॉ॰ अभिषेक पांडेय, ओम प्रकाश त्रिपाठी पुरुषोत्तम चौबे, फूलचन्द गुप्त, नित्यानंद तिवारी, शशांक पांडेय, सहित व अन्य प्रशिक्षु उपस्थित रहे।